B.A. (Part-II) EXAMINATION, 2018

(10+2+3 Pattern) (Faculty of Arts)

[Also Common with Subsidiary Paper of B.A. (Hons.) Part-II Three-Year Scheme of 10+2+3 Pattern]

हिन्दी साहित्य

प्रथम प्रश्न-पत्र–रीतिकाल

Time Allowed : Three Hours Maximum Marks : 100

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न-पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक उसके सामने अंकित हैं।

1. निम्नलिखित पद्यावतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(क) पूरन पूरान अरु पुरुष पुरान परि- 10
पूरन बतावैं न बतावैं और उक्ति को।
दरसन देत जिन्हें दरसन समुझै न,
नेति-नेति कहैं बेद छाँड़ि भेद-जुक्ति को।
जानि यह 'केसोदास' अनुदिन राम-राम,
रटत रहत न डरत पुनरुक्ति को।
रूप देहि अनिमाहि गुन देहि गरिमाहि,
नाम देहि महिमाहि भक्ति देहि मुक्ति को।

अथवा

पत्रा हीं तिथि पाइयै वा घर कें चहुँ पास। 10
नितप्रति पून्यौई रहै आनन-ओप-उजास॥
मरतु प्यास पिंजरा पर्‌यौ सुआ समै कै फेर।
आदरू दै दै बोलियतु, बाइस बलि की बेर॥

(ख) माखन सों मन दूध सों जीवन, है दधि सों अधिकौ उर ईठी। 10
जा छबि आगे छपाकर छाँछि समेत सुधा, वसुधा सब सीठी॥
नैनम नेह चुवै, कवि "देव" बुझावत बैन वियोग अंगीठी।
ऐसी रसीली अहीर अहै, कहौ क्यों न लगे मनमोहन मीठी॥

अथवा

ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहनवारी, 10
ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहाती हैं।
कन्द मूल भोग करैं कन्द मूल भोग करैं,
तीन बेर खातीं ते वै तीन बेर खाती हैं।
भूषण सिथित अंग भूषन सिथिल अंग,
बिजन डुलातीं ते वै बिजन डुलाती हैं।
भूषण भनत सिवराज बीर तेरे त्रास,
नगन जड़ातीं ते वै नगन जड़ाती हैं॥

(ग) मीत सुजान अनीत करौ जिन हा हा न हूजियै मोहि अमोहि। 10
डीठि कौ और कहूँ नहिं ठौर फिरी दृग रावरे रूप की दोही।
एक बिसास की टेक गहे लगि आस रहे बसि प्रान-बटोही।
हौं धन आनंद जीवनमूल दई कित प्यासनि मारत मोही॥

अथवा

ऐसी न देखी सुनी सजनी घनी 10
बाढ़त बात बियोग की बाधा।
त्यों 'पद्माकर' मोहन को तब
तैं कल है न कहूँ पल आधा॥
लाल गुलाल घलाघल में दृग
ठोकरे दे गयी रूप अगाधा॥
कै गयी कै चेटक-सी मन
लै गयी लै गयी गयी राधा॥

(घ) पालन खेलत नन्द ललन छलन बलि,
गोद लै लै ललना करति मोद गान है
'आलम' सुकवि पल पल मैया पावै सुख
पोषित पीयूष सु करत पय पान हैं॥
नन्द सो कहत नन्दरानी हो नहर! सत,
चन्द की सी कलमि बढ़त मोरे जान हैं।
आई देख आनन्द सो प्यारे कान्ह आनन में,
आन दिन घरी आन छवि आन है॥
आन दिन घटी आन छवि आन हैं॥

अथवा

कालिंदी की धार निरधार है अधर, गन 10
अलि के धरत जा निकाई के न लेस हैं।
जीते अहिराज, खँडि डारे हैं सिखंडि, घन,
इंद्रनील कीरति कराई नाहिं ए सहैं।
एड़िन लगत सेना हिय के हरष-कर,
देखत हरत रतिकन्त के कलेस हैं।
चीकने, सघन, अंधियारे तैं अधिक कारे,
लसत लछारे, सटकारे, तेरे केस हैं॥

2. "'रामचन्द्रिका' काव्य में केशव की संवाद-योजना अद्वितीय है।" इस कथन के आलोक में 'रामचन्द्रिका' के संवाद-सौष्ठव का विवेचन कीजिए। 15

अथवा

'रीतिकालीन अतिशृंगारिकताके मध्य भूषण की कविता जीवन का जयघोष है।' इस कथन के आलोक में भूषण के काव्य की विशेषताएँ बताइये। 15

3. "बिहारी एक सफल मुक्तक कवि थे।" सौदाहरण स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

"मोहि तो मेरे कवित्त बनावत" कवि के इस कथन को स्पष्ट करते हुए घनानन्द की स्वच्छन्द काव्य धारा का निरूपण कीजिए। 15

4. ''देव के काव्य में लाक्षणिकता और व्यंग्यात्मकता के सौन्दर्य के सहज दर्शन होते हैं।'' इस कथन को सप्रमाण सिद्ध कीजिए। 15

अथवा

''सेनापति ऋतुवर्णन करने में अग्रणी थे।'' इस कथन पर समुचित प्रकाश डालिये। 15

5. निम्नलिखित विषयों पर आलोचनात्मक टिप्पणी लिखिये :

(क) पद्माकर के काव्य सौष्ठव पर प्रकाश डालिये। 7½

अथवा

''भूषण राष्ट्रीय कवि थे।'' स्पष्ट कीजिए।

(ख) रीतिकाल की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। 7½

अथवा

आलम के काव्य-सौन्दर्य का विवेचन कीजिए।